नवभारत, नागपुर 9 अप्रैल 2009

नहित में है सीटीसी का उत्पादन बंद कर

तिनिधि

उद्यमियों को यह मालूम नहीं
पने संयंत्र में जिस कार्बन
इड (सीटीसी) का उपयोग
हैं, वह काफी खतरनाक है
ोन लेयर को खत्म करने में
मह भूमिका है. सीटीसी के
य हैं अब उद्यमियों को उन
की खोज करनी होगी,
रकार ने 31 दिसंबर के बाद
उत्पादन को भारत में पूर्ण
ंद करने का निर्णय ले लिया
जानकारी विदर्भ इंडस्ट्रीज
ान, महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण
र जीटीजेड की ओर से
सम्मेलन में वक्ताओं ने
ए. एमपीसीबी के प्रादेशिक

अधिकारी वी.एम. मोटघरे ने बताया कि केंद्र सरकार ने इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है, जिसे देखते हुए विदर्भ में भी नजदीकी निगाह रखी जा रही है. यह सरकार के निर्णय को अमल में लाने का पूरा प्रयास किया जाएगा. जीटीजेड की नीलिमा डी सिल्वा ने बताया कि सीटीसी का उपयोग ओजोन के लिए तो हानिकारक है ही शरीर के लिए भी घातक है. बावजूद इसके अनेक उद्योगों में इसका उपयोग किया जा रहा है. मुद्रण, धातु, अभियंत्रिकी, इलेक्ट्रोप्लेटिंग, प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, अग्निशमन मशीन, हीरे पालिशिंग, टेक्सटाइल, गारमेंट, स्पिनिंग मिल ऐसे क्षेत्र हैं, जहां इसका उपयोग हो रहा है. उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से 17 सितंबर 199 बहुपक्षीय समझौते पर हस्त गए हैं. इसलिए भारत में प्र लगाया जाता है, तो अ कानून का उल्लंघन होगा. भारत में 4 कंपनियां हैं, जे का उत्पादन कर रही हैं. सभ को नोटिस जारी कर हिदायत है. डी सिल्वा का कहन सीटीसी के कई पर्याय हैं अलग उद्योग के लिए अल उत्पाद बाजार में हैं. जो कम और हानिकारक हैं. जैसे आईपीए, एमडीसी, पीसी पेट्रोल आदि. इस अवसर प सिन्हा, वी. रामासुब्रमणियन से उपस्थित थे.